बाबा ने दिया जीवनदान

ब्रह्माकुमारी हर्षा, सुरेन्द्रनगर (गुजरात)

दिसंबर, 2005 में एक दिन मेरा पुत्र मोटरसाइकिल लेकर अपने दोस्तों के साथ घर से निकला। रास्ता खराब और गति ज्यादा होने से अचानक मोटरसाइकिल फिसल गई जिस कारण वह उछलकर दूर काँटों में जा गिरा, ब्रेन हैमरेज हो गया और बेहोश हो गया। दोस्त उसे उठाकर अस्पताल ले गये। डॉक्टर ने सीटीस्केन किया तो पाया कि सिर पर सात फ्रैक्चर थे। तब तक मैं भी अस्पताल पहुँच गई।

हमारा शहर छोटा होने की वजह से सुविधाएँ नहीं थीं, ऑक्सीजन पर रखा था और ग्लूकोज़ की बोतल लगी थी। डॉक्टर ने जवाब दे दिया कि तुरंत अहमदाबाद ले जाओ। मेरी इच्छा थी कि इस आत्मा को पहले सेंटर पर बाबा (परमात्मा पिता) के कमरे में ले जाऊँ लेकिन इतना समय नहीं था। सेंटर अस्पताल से दूर था। सेंटर पर दीदी को संदेश भेज दिया और उसी घड़ी एम्बूलेंस में एक डॉक्टर को साथ लेकर हम अहमदाबाद के लिए रवाना हो गए।

मुझे तो एक बल, एक ही भरोसा था, बाबा, बाबा और बाबा। अंदर ही अंदर बाबा से बातें कर रही थी। बाबा को बोले जा रही थी कि मेरे बाबा, सर्वोच्च रूहानी डॉक्टर तो आप ही हो, आपके सिवाय किसी भी अन्य पर मेरा भरोसा नहीं है। माँ भी आप हैं तो बाप भी आप। एक माँ की आवाज़, माँ तक अवश्य पहुँचती है, प्रभु, आप भी माँ और मैं भी माँ। माँ ही माँ का दर्द समझ सकती है। फिर मैंने बाबा को कहा, आप सदा बच्चों से पूछते हो कि बाप से कितना प्यार है, आज यह बच्ची पूछती है कि बाबा का बच्चों से कितना प्यार है। मेरे बाबा! मीठे बाबा! बस हर श्वास में बाबा, बाबा ही निकल रहा था। मैं क्या बोले जा रही थी, मुझे भी पता नहीं था।

अभी आधे रास्ते में ही थे कि किसी रुकावट के कारण ग्लूकोज़ की नली में से ग्लूकोज़ आना बंद हो गया। डॉक्टर ने बहुत कोशिश की लेकिन ग्लूकोज़ चालू नहीं हुआ। बच्चे को हिचकियाँ आने लगीं और हालत बिगड़ने लगी। तभी मैंने बाबा को आवाज़ दी, बाबा! नीचे आओ, मुझे आपकी बहुत ज़रूरत है, नीचे आओ। बाबा ने अचानक चमत्कार किया कि एम्बूलेंस का चालक, गाड़ी रोककर पीछे आ गया, उसने कुछ फेर-बदल किया और ग्लूकोज़ आना चालू हो गया। मैं समझ गई कि यह काम बाबा का ही है। इसके लिए भले ही डॉक्टर के स्थान पर गाड़ी चालक को निमित्त बनाया गया। दिल से निकला, शुक्रिया बाबा शुक्रिया! सचमुच आपका प्यार बच्चों से ज़्यादा है। जिस अधिकार से बाबा को बुलाया, वह अधिकार मिल गया।

शाम पाँच बजे अहमदाबाद स्टर्लिंग हॉस्पिटल में पहुँच गये। तुरंत वेंटीलेटर पर उसे रख दिया। तकरीबन बीस दिन तक ऐसे ही रहा, बाद में स्थान बदल दिया गया। इन बीस दिनों में मेरे सभी रिश्तेदारों तथा ब्रह्मावत्सों ने बहुत ही भगवान से प्रार्थना और योग किया। मैंने भी अहमदाबाद के नज़दीकी सेवाकेंद्र का पता लगाया, वहाँ गई और हॉस्पिटल में बच्चे के कमरे में दीवार पर भी बाबा की तस्वीर लगा दी। पूरे दिन में हमें सिर्फ पाँच मिनट उससे मिलने के लिए देते थे। मैं जब भी मिलती थी, तो कानों में कहती थी, हे आत्मा, तू हिम्मत रख, हज़ार भुजाओं वाले बाबा आपके साथ हैं, वही आपकी छत्रछाया हैं, वही आपको दृष्टि दे रहे हैं।

योग में बैठती तो यही दृश्य इमर्ज करती कि सभी डॉक्टर खड़े हैं और बीच में रूहानी डॉक्टर (शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा) भी खड़े हैं। बाबा बच्चे का ऑपरेशन कर रहे हैं। कभी बाबा उसे

वतन में ले जाते हैं और कभी बिस्तर पर सोए हुए के सिर पर हाथ फिरा रहे हैं जिससे उसके मस्तक के सब दुख-दर्द दूर हो रहे हैं। इस तरह एक मास पाँच दिन तक हॉस्पिटल में रहे। सचमुच कमाल थी बाबा की, जो बच्चे का प्रैक्टिकल में एक भी ऑपरेशन नहीं हुआ, सभी चोटें ऑपरेशन के बिना भरती जा रही थी। मैंने हॉस्पिटल में रहते भी रोज़ सेंटर पर जाकर क्लास की। एक भी मुरली मिस नहीं की और अमृतवेला भी नियमित करती रही। सेंटर की एक बहन ने बाबा का संदेश सुनाया कि बाबा बच्चे को जीवनदान दे रहा है और सचमुच बाबा ने बच्चे को जीवनदान दे दिया। दो महीने तक तो बच्चा कुछ भी बोला नहीं। इसके बाद जो भी नलियाँ थीं वे सब निकाल दी गईं। धीरे-धीरे स्थिति सुधरती गई और फिर बोलना भी शुरू कर दिया।

मार्च, 2006 को बाबा से मिलने हम शांतिवन पहुँचे। स्टेज पर बाबा ने उसे दृष्टि भी दी और सेब भी दिया। आज वह बिल्कुल ही ठीक हो गया है। गाड़ी और मोटरसाइकिल आदि सब चलाता है। सबको पहचानता भी है। उसे देखकर कोई नहीं कह सकता कि दो साल पहले उसके साथ इतना बड़ा हादसा हुआ था। वाह बाबा वाह! तेरी कमाल! तेरे अहसान कभी नहीं भूल पायेंगे। ❖

मतभेद भले हो, मनभेद नहीं

ब्रह्माकुमारी स्वीटी, चित्तौड़गढ़

एक बार एक बहुत बड़े महात्मा जी का खेमा जंगल से गुज़रते हुए रात को वहीं ठहर गया। उसी समय जंगल में से 75 वर्ष का एक वृद्ध व्यक्ति भी जा रहा था। खेमे की रोशनी देख वह भी उस ओर बढ़ गया और महात्मा जी के पास जाकर रात भर खेमे में शरण देने का आग्रह करने लगा। महात्मा जी ने उसे अकेला व वृद्ध जानकर अनुमति दे दी। नित्यकर्म के अनुसार महात्मा जी ने, रात्रि विश्राम से पहले ईश्वर की प्रार्थना करने के लिए अपने सभी शिष्यों के साथ उस वृद्ध व्यक्ति को भी बुलवाया लेकिन उस व्यक्ति ने ईश्वर की प्रार्थना करने से मना कर दिया। महात्मा जी ने कारण पूछा तो व्यक्ति ने कहा, मैं भगवान में विश्वास नहीं रखता, ईश्वर जैसी कोई शक्ति है ही नहीं।

वृद्ध व्यक्ति के ईश्वर के प्रति ऐसे विचार महात्मा जी को अच्छे नहीं लगे। उन्होंने उसे वहाँ से चले जाने को कहा। यह सुनकर वह व्यक्ति महात्मा जी से विनती करने लगा कि कृपया रात भर उसे वहीं रहने दिया जाये लेकिन महात्मा जी नहीं माने और बोले, जो व्यक्ति ईश्वर का सम्मान नहीं करता, उसे मैं अपने सामने सहन नहीं कर सकता। यह वार्ता चल ही रही थी कि महात्मा जी आंतरिक प्रेरणा से मौन हो गए। मौन अवस्था में प्रभु से वार्तालाप हुआ। प्रभु ने कहा, वत्स, इसे खेमे में आज रात ठहरने दे। महात्मा जी बोले, प्रभु, यह व्यक्ति आपसे विमुख है अत: मैं इसे अपने सामने एक क्षण भी सहन नहीं कर सकता परन्तु आप द्वारा इसका पक्ष लेने की बात मैं समझा नहीं। तब प्रभु बोले, अरे! मैं इस व्यक्ति को 75 वर्षों से सहन कर रहा हूँ, और तुम मेरे भक्त होकर इसे एक रात के लिए भी सहन नहीं कर सकते हो?

किसी ने ठीक ही कहा है, मतभेद भले ही हो पर मनभेद न हो। संसार के सभी मनुष्यों के मत, आस्था, विश्वास, श्रद्धा अलग-अलग प्रकार के हो सकते हैं परन्तु इससे क्या फ़रक पड़ता है? **यदि हमें याद रहे कि हम सभी एक ही पिता परमात्मा की अविनाशी सन्तान हैं, एक ही घर परमधाम से इस सृष्टि रंगमंच पर पार्ट प्ले करने आए हैं और हम सभी यहाँ मेहमान हैं, हम सभी को उसी परमघर में अब वापस भी लौटना है तो भिन्नता में भी एकता हो सकती है।** ❖